भिवानी कैसेट क्रमांक	103
समय	रात्रि
दिनांक	03.03.93

शब्द-

गुरु के भजन बिना नहीं निस्तारा, जाग-२ नर क्या सूता।
चौरे नहीं लागै मारेंगे यमदूता।।
जप कर तप कर, करोड़ जत्न कर,
काशी में जाय करौंत लीता।
बिना भजन तेरी मुक्ति कोन्या मरज्या योगी अवधूता।।
जोगी होग्या जटा बढ़ा लई अंग रमा लई भभूता।
दमड़ी कारण काया जलाली, योग नहीं तेरा हठ झूठा।।
जिनकी सुरता लगी भजन में काल जाल से नहीं डरता।
अधर अणी पर आसण रखते वह योगी हैं अवधूता।।
सो वतड़े नर गए चौरासी, जागतड़ा नै जुग जीता।
रामानन्द के कहत कबीरा मंजिले-मंजिले जा पहुंचा।।

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!
राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों! जितने सत्संग प्रेमी आए हुए हैं सब से विनती है कि जब तक सत्संग हो शांति से सुनते रहें।

आप लोगों को इतनी आई हुई संगत देखकर मैंने सोचा कि मैं जरूर ही सत्संग दूंगा। नहीं तो इस टाइम के सत्संग तो दूंगा। ये कबीर साहब की वाणी है और कई बार ये शब्द गा–गा कर पुराना कर दिया है। पर जब सुनते है तो यह पुराना मालूम नहीं होता है। संतों की वाणी में हर बार न्यारा ही मजा आता रहता है। कबीर साहब कोई मामूली संत नहीं थे। वे चारो युगों के संत थे, वे पूर्ण पुरुष थे। अगर कोई कबीर साहब की निंदा करता है। कबीर साहब को अगर कोई नहीं मानता है तो उसकी मर्जी है। कबीर साहब तो कबीर साहब ही थे। अगर कोई कबीर का सांग भर कर चलता है तो समझ लो उसको काल बख्शेगा नहीं। कबीर कौन है? कबीर की शिक्षा ही कबीर है। उसे लेकर चलो। अगर मैं कबीर का टोप पहन कर और उसी की तरह दाढ़ी रख कर कहूं कि मैं कबीर हूं तो मैं मारा जाऊंगा।

कबीर की शिक्षा को लेकर चलो तो तिर जाओगे। इस वाणी की ये बातें मैं कई बार बता चुका हूं। इस वाणी में जो कबीर साहब ने कहा, उनके एक ही शब्द को अगर समझ लो तो तिर जाओगे। वे कहते हैं कि मंजिलें–मंजिलें जा पहुंचा। अब उन मंजिलों का पता देने वाला भी तो होना चाहिए। उस कबीर साहब के अनुयायियों से अगर तुम पूछो कि वे कौन हैं? तो हम ही कबीर साहब के बेटे हैं। सो ही मैं बजाता हूं। काफी लोग कहते हैं कि हम कबीर पंथी है।। पंथ तो रास्ते को कहते हैं। पर अगर पूछा जाए कि रास्ते में पड़ाव कितने आते हैं? कौन से पड़ाव पर कौन सी ध्वनि होती है? और कैसी–कैसी धुनियां है? उन पड़ावों के रूप रंग कौन–कौन से हैं? अगर न बता सके तो क्या हम इस काबिल हैं कि हम कबीर पंथी कहला सकें। इसीलिए तो मैं कह देता हूं कि मैं कबीर का बेटा हूं। मेरे दाता अरमान साहब पूर्ण पुरुष थे। जब पूर्ण सतगुरु मिल जाता है तो काल का कर्जा चूक जाता है। जब पूर्ण सतगुरु मिल जाता है तो उन मंजिलों का भेद आप ही आप मिल जाता है। वे रास्ते में अटकते नहीं है। सो दिन के सत्संग में मैंने स्वामी जी महाराज की मिशाल दी थी। उन्होंने कहा है–

सतगुरु पूरा ढूंढ तेरे भले ही कहूं।
पिछलों की तज टेक तेरे भले की कहूं।।
तू बहुत भोजन मत जीम, तेरे भले की कहूं।
तू तान वचन मत मार, तेरे भले की कहूं।।
तू नींद भर मत सो, तेरे भले की कहूं।।

मैं उनकी कितनी बातें बताऊं जो उन्होंने भले की बातें बताई हैं। वे तो कहते ही चले गए। पर तुम एक दो बातों को भी समझ लो तब भी अच्छा है।

सतगुरु पूरा खोज तेरे भले की कहूं।

सतगुरु पूरा किसको कहते हैं? दिन का शब्द भी कबीर साहब का ही था और अब भी कबीर साहब का ही शब्द है। दिन का शब्द ये था कि–

चल सतगुरु की हाट सौदा मंहगा रे।

यह भी ऐसी ही बात है कि–

सोवतड़े नर गए चौरासी, जागतड़ों ने जुग जीता।

वे सोवतड़े और जागतड़े कौन है? कबीर साहब कहते हैं कि जो सो रहे थे वे तो चौरासी में चले गए, नर्कों में गए और जो जागते थे वे बच गए। जागना किस को कहते हैं? जागना तो उसी का जो नाम का सुमरन करता है। जो उस धुनात्मक नाम का सुमरन करता है। नाम का सुमरन किस तरह से किया जाता है? जागना तो उसी का है जो उस धुनी को सुनता रहता है? शब्दों का जाप तो बंद हो जाता है आपको पता है इस बात का। हम जो लफ्जों का जाप करते हैं इसके बारें में तो स्वामी जी ने भी कहा है कि जो **लिखन पड़न में आया, वहीं वर्णात्मक कहलाया। ये जाप तो बंद हो जाता है पर वह धुनात्मक कभी भी बंद नहीं होता है। हम मंदिरों में कीर्तन करते हैं। २ घंटे, ४ घंटे, १० दिन, ५ दिन फिर वह कीर्तन भी बंद हो जाता है।** हम कथा वार्ता पढ़ते है। वह कथा भी पूरी हो जाती है परन्तु संन्तों की कथा न कभी पूरी हुई है और न कभी होगी। मंजिल–मंजिल हम अपने घर जा पहुंचते हैं। आपने यह भी तो सुना होगा कि–

सती का जूझना दस, बीस मिनट का।
सुरे का जूझना घंटा, दो घंटे का।।

संत का जूझना तो जिन्दगी भर का है। अगर संत थोड़ी सी भी ढील कर दे तो संत धड़ाम से गिर सकता है। सो संत का जीवन भर का जूझना है इसे ही जागना कहते हैं। जागना भी यही है कि हम संसार की तरफ से सोते रहें और परमात्मा की तरफ से जागते रहें। अगर हम विषय–विकारों में पड़े हुए हैं, दूसरों की निंदा बुराईयों में लगे हुवे हैं, कौमों, मजहबों के झगड़ो में फंसे हुवे हैं। तो हम संसार की तरफ से जागते हैं और दुनिया की तरफ से सोना है। जो जागता है तिर जाता है तो सोता है वह नर्कों में चला जाता है क्योंकि उसके लिए नर्कों का रास्ता खुला है। लेकिन हमें मालिक की तरफ से सो रहे हैं। तो परमात्मा की तरफ से जागना है और वह कैसे जागता है? वह तो विषय–विकारों का कीड़ा है। रात और दिन विषय–विकारों में लगा रहता है। विषय–विकार भी अनेक है दूसरों की निंदा भी विकार है। हमें धन की हाय लगी लगी है, यह भी विकार हैं।

जितनी भी मन की कल्पना है, ये सब ही विषय हैं।

आप लोग तो केवल 'काम' को ही विषय समझते हो जो घटिया विचार होते हैं वे कामातुर होकर गिरते हैं। पर जितनी भी मन की कल्पनाएं हैं वे सारे ही विषय हैं, ये बात चरणदास जी कहते हैं। अगर हम उनकी तरफ से सो जाते हैं तो हम मालिक की तरफ से जाग जाते हैं। इसीलिए संत कहते हैं–

सोबतड़े नर गए चौरासी, जागतड़ों ने जुग जीता।

जो जागते हैं वही जुग को जीतते हैं वे कैसे जागते हैं? इस शरीर में कई मंजिलें हैं। इसी कारण से इसके तीन भाग किए हैं। महात्मा भी कहते हैं–

पिंडे सो ब्रह्मंडे, खोजै सो पावै।
तत्वा तो में तेरा पीव, सतगुरु होए लखावै।।

काफी लोग तो इसका वर्णन बड़ी अच्छी तरह करते हैं। इस शरीर के तीन हिस्से हैं, एक पिंड, दूसरा ब्रह्मंड और तीसरा पार ब्रह्मांड है। जैसे पिंड और ब्रह्मंड हैं आगे जाओगे पार ब्रह्म है और उसके भी आगे कुछ न कुछ मिल जाएगा। पर इस शरीर के तीन भाग करते–करते चार भाग कर लेते हैं। सतखण्ड से नीचे तो काल व माया का देश है। इसमें मुक्ति नहीं है। मैं तो काफी बार सत्संग में आपको बता दिया है। पर यह भी बता देता हूं जो आदमी जहां का बीजा लेगा उसे वहां ही जाना पड़ेगा। जिसका जहां का बीजा है वह वहां पहुंच सकता है।

जो नाम तुम जानते हो और वह जिस मंजिल का है वह उस मंजिल का तुम्हारे पास में बीजा है। जिस मंजिल की वह ध्वनि है और तुम उसका जाप करते हो तो उस मंजिल पर पहुंच जाओगे। अगर तुम्हें सच्चा रहबर मिल गया है तो। अगर सच्चा रहबर नहीं मिला है तो गिर जाओगे। सच्चा रहबर कौन है? किसी को झटका न लग जाए। मैं सीधा आदमी हूं। कह देता हूं। मेरे बस की बात नहीं है। सच्चा रहबर तो वही है जो पवित्र अन्न खाता है। शुद्ध अन्न से ही शुद्ध मन होता है। जब हम चढ़ावा या

भोगा मिणसा खाते हैं तो हमारे भी गंदे हो जाते हैं। आपने अन्न के बारें में तो विचार किया होगा कि अन्न में कितनी भारी ताकत है कि कही नहीं जा सकती है। नानक साहब कहते हैं–

गुरु पीरा होय मंगण जाए, ताके भूल न लगिए पांए।
घल खाए, हत्थों दे नानक राहे पिछाणे ता ही शरण लेए।।

कबीर साहब तो बहुत तेज बोलते हैं।

ग हस्थी की टुकड़ा नौ-नौ उंगल दांत।
भजन करे तो ऊबरै, नातर पाड़ै आंत।।
उत्तम भिक्षा अजगरी, मांग लिया ना दोष।
उदर समाना मांगले, निश्चय पावै मोक्ष।।
आया सो दूध समाना, मांग लिया सो पानी।
खेंचा तानी रक्त बराबर या सतगुरु की वाणी।।

कबीर साहब फिर क्या कहते हैं–

सती न पीसै पीसना, जो पीसै सो रांड।
संत न भिक्षा मांगसी, जो मांगै सो भांड।।

गुरु नानक साहब कहते हैं–

हक पराया नानका, उसको गौ उसको सूअर।।

मैं कबीर साहब का बेटा हूं इसीलिए कबीर की वाणी का अर्थ बताता हूं। कबीर साहब की वाणी का अर्थ हरेक के बस का भी नहीं है। क्यों नहीं है बस का, क्योंकि लोग अभ्यास ही नहीं करते। अभ्यास करते तभी तो पता लगता। मैं क्या सच्ची कहता हूं कोई न कोई बात मैं भी गलत कह जाऊंगा। पर मैं स्वयं ये बात जरूर सोचता हूं कि अभ्यास करने वाला ही अर्थ कर सकता है। दूसरे के वश की बात नहीं है। अभ्यासी चाहे कितना ही सीधा हो वह भी अर्थ लगा सकता है। उसे उस घर का पता है। सो मैंने भी आपको वही बताया जो कबीर साहब कहते हैं–सुरत नीचे से ही चलती है। पहले जमाने में नीचे से चलते थे और ऊपर को जाया करते थे। रास्ते में ही रह जाया करते थे। पर आज कल तो संत सतगुरुओं ने बड़ी दया की है। उन्होंने तो पहले ही पुराने संतों की तरह से ऐसा तजुर्बा बता दिया कि संतों की दया से अपना जीवन पवित्र रखा करो। जिसके विचार ऊंचे हैं वह कभी भी नहीं गिरेगा। जिसके विचार नीचे हैं वह गिर जाएगा। कबीर साहब की वाणी थी–

सोवहतड़े नर गए चौरासी, जागतड़ों नै जुग जीता।

यहां कितनी बड़ी बात है? सोवतड़े के बारें में मैंने भी अपनी बात आपके सामने बताई है कि ऐ सत्संगियों! मेरा सतगुरु नहीं होता तो मैं भी सोया पड़ा रहता। सतगुरु मिलने से ही नहीं लग्न से भी जागते हैं। पूर्ण सतगुरु के वचनों पर अमल करोगे तभी जाओगे। कभी यही सोच लो कि हमें सतगुरु तो मिल ही गया है। अमल करने की क्या जरूरत है?

अमल करे सो ही पावे अवधू अमल करे पावै।
बिना अमर के तो दर-दर के धक्के ही खावै।।

मैंने आपको दिन के सत्संग में कहा होगा या कल कहा होगा कि जो लोग रात और दिन ग्रंथों के पाठ करते रहते हैं लेकिन उनके ऊपर चलते नहीं, उनके विचारों पर अमल नहीं करते हैं उनके लिए वे पाठ कुछ भी नहीं कर सकते। जो वाणी पढ़ते रहते हैं और सत्संग करते रहते हैं लेकिन सत्संगों के उसूलों पर नहीं चलते हैं उन्हें ये सत्संग कभी भी नहीं तारेंगे। वह सत्संग उनको खा जाएगा। सो आप अगर तिरना चाहते हो तो अपने बुजुर्गों की लाइन को पकड़ कर उसी पर चल पड़ो। आप कहोगे कि कोई ऐसी ही मिसाल दो तो क्या कहूं?

मेरे पास सामने एक भाई बैठा है यह मुझे बाप के तुल्य है। इनके गांव की एक मिशाल बताता हूं। मेरे पास वह आ गया। उसने कहा–हम कबीर पंथी हैं। मैंने कहा–अरे भले लोगों ऐसी बातें तो मत कहो। कबीर साहब की वाणी तो बड़ी टेढ़ी है। कबीर साहब ने तो कहा है–

नारी की झांई, अंधा होय भुजंग।
तिन की कौन गति, नित रहे नारी के संग।।

तुम कहते हो कि हम कबीर पंथी हैं। पंथ तो रास्ते को कहते हैं। कबीर साहब ने तो बड़ी कठोर खड़तल कही है। क्या तुम उनके उसूलों पर चलते हो? कबीर साहब ने तो यह भी कहा है–शराब, सुल्फा, अफीम खाने वाले का पल्ला छू जाए तो भी सात पीढ़िया नर्क में चली जाएंगी और मैंने उन्हीं की वाणी लेकर बताया है। ह दय दास का तीसरा कुसंग देखो। बारली वाले ने लिखा है। इस पर है

तो गरीब दास की छाया पर फिर भी उसे जाकर देखो। इसे क्या तुम्हारे बड़े ने लिखा है। उसने कहा–वह तो बेवकूफ था। उसका क्या करिए? वह तो ऐसा ही बेहुदा था। अब जिसने उनके खिलाफ वाणी लिख दी, वह बेहुदा हो गया। सो मैं इन लोगों को बार–बार कहता हूं कि अपने विचार पवित्र नहीं करोगे तो कभी भी नहीं तिरोगे। मेरा यह हक तो नहीं कि मैं किसी का नाम लेकर यह बात कहूं। पर क्या करूं? मेरी प्रारब्ध ही माड़ी है। कह देता हूं। मैं लोगों की तरह बुरी–बुरी किताबें नहीं लिखता हूं। मैं तो कह देता हूं। सीधा कहता हूं–आइए। कबीर साहब की ही बात लेकर आगे चलो। दादू जी की वाणी लेकर चलो। नानक साहब की वाणी लो। दादू जी की वाणी कितनी सीधी है?

दादू दीदा और कहै सब सुनीदा।

उन्होंने जो देखा वही कह सकता है। कब देखा जाएगा। वह तो तभी देखा जा सकेगा जब तुम जागते रहोगे और जागते–जागते इतना आनन्द आएगा कि बड़ा भारी। जिसकी चार घंटे की नींद है वह क्या कर लेगा? संत की तो नींद भी डेढ़ या दो घंटे की ही होती है। मैं आपको संतों की पहचान बताता हूं। अगर वह आध पाव से, छटांक, डेढ़ छटांक से फालतू खाता है तो समझ लेना वह संत नहीं है। वह तो पेट–कुटा है। दो, डेढ़ घंटे से फालतू सोता है तो समझो वह अजगर है और कुछ भी नहीं है। संत का तो यही काम है। कम से कम छः घंटों का तो एकांत का आसन होना चाहिए। अगर तुम प्रमाण लेना चाहते हो तो किसी का प्रमाण भी ले लो। पर कई लोग यूं भी कहते हैं–

चंदा ने दीखै चालता, बढ़ती न दीखै बेल।
साधु न दीखै सुमरता, ये कुदरत के खेल।।

सुमरता साधु नहीं दिखता है। पर साधु कभी भी वाद–विवाद में टाइम बर्बाद नहीं करता है। उसके सुमरन की बड़ाई तो मैं भी करता हूं कि वह सुमरन करता नहीं दिख्ता और न ही वह दूसरों के वाद–विवाद का कीड़ा नहीं बनता है। वह अपना काम करके चला जाता है। वही जीवों का उद्धार कर सकता है। वही जीवों को ले जा सकता है। सो सतगुरु तो सतगुरु ही होता है। पर मैं आप लोगों को कई बातें ऐसी बताऊंगा कि आप उनको सुनकर चकरा जाओगे। आप यह भी कह दोगे कि यह तो दूसरों की बुराइयां करता है। सतगुरु नाम किसका है? सतगुरु तो जहां जन्म लेता है वहीं गुल खिला देता है। बाबा जैमल सिंह महाराज ने जहां जन्म लिया वहीं आनन्द कर दिए। हजूर महाराज राय सालिगराम ने जहां जन्म लिया वहीं देखो क्या कर दिया? स्वामी जी ने जिस गली में जन्म लिया उसी में क्या कर दिया? संत सतगुरु गांव से परे जाकर तो कोई भी बन जाता है। चाहे कोई कोढ़ी, कंगाल और कितने ही उसने खोटे कर्म क्यों न कर दिए हो। पर अपनी गली में ही बनकर दिखाये तभी पता लगता है उसी का नाम संत सतगुरु है। वहीं जागता हुआ सुरतों को ले जा सकता है। सोया हुआ क्या ले जाएगा? वह तो आप ही नर्क में जाएगा तथा औरों को भी ले जाएगा।

मेरी छोटी उम्र मिशालें की याद आ जाती है। मेरी दादी की एक कहानी आपको सुनाता हूं।

जैसा खाए अन्न, वैसा होजा मन।
जैसा पीवै पानी वैसी बोलै वाणी।।
जैसी पीवे दूधी, वैसी होज्या बुद्धि।
जैसा ख्याल, वैसा हाल।
जैसी मति, वैसी गति।

ऐसा तो महात्मा बार–बार कहते आये हैं। आप बुजुर्गों की कहानियों से भी शिक्षा लिया करो। पर जब तक पवित्र अन्न नहीं खाओगे तो मन कभी भी शुद्ध नहीं होगा। महात्मा कहते हैं कि–

खाओगे शुद्ध अन्न, हो जाएगा शुद्ध मन।

मैंने आप लोगों को कई बार बताया कि ये कहानियां मेरी सुनी हुई थी। दो कहानियां आपको सुनाता हूं। उन्होंने मेरी मदद की। मैं किसी वक्त पर दादी के पास रहा करता था। उस वक्त मेरी मां मर गई थी। मैं कहता था कि दादी कहानी सुना। उन्होंने कहानी सुनाई–

एक राजा था। वह बूढ़ा हो गया। उसने बुढ़ापे में ब्याह करवा लिया। बहु जवान आ गई। मेरी कहानी पर अमल करना, कभी मखोल करना शुरु कर दो। राजा कहीं बाहर चला गया। रानी महल पर खड़ी हुई थी। फौज का

सेनापति फौज को लिया आ रहा था। वह जवान था। रानी ने उसको देश लिया। उसने बांदी से कहा कि इसे बुलाकर लाओ। वह उस सेनापति को बुला लाई। उसने कह दिया कि रानी साहिबा ने बुलाया है।

अब वह आया और उसने पूछा कि क्या बता है? रानी ने कहा–बात क्या बताऊं। राजा तो बूढ़ा है। जोड़ी तो तेरी–मेरी ही है। राजा तो पता नहीं कब आएगा। आजा सार और चौपड़ खेलते हैं। तब यही खेल थे। उन्हीं में सब कुछ बन जाया करता था। सेनापति ने कहा–तू तो राजा की रानी है। मेरी माता है। रानी ने कहा–तू नौकरी से ही हाथ धो लेगा। तू खामखा मौत के मुंह में क्यों आता है? जैसा मैं कहती हूं वही काम कर। सेनापति बेचारा डरता बैठ गया। इतनी ही देर में राजा आ गया। राजा ने आते ही किवाड़ खटखटाए। सेनापति ने कहा–अब क्या करूं? राजा तो आ गया है। रानी से कहा–कोई नहीं। मैं तेरा प्रबन्ध कर दूंगी। एक पाखाने की नाली थी, जिसके आगे पतरे लगे थे। उस नाली के अन्दर उसको खड़ा कर दिया। उसको कह दिया यहां तुझे कोई भी नहीं देखेगा। यहीं खड़ा हो जा। वह वहां खड़ा हो गया और वह राजा को लाने चली गई। रानी ने पूछा–क्या बात है? राजा ने कहा–मुझे तो दस्त लगे हैं। राजा पाखाने में चला गया। राजा के दस्त सेनापति के सिर पर गिरते रहे। सारे कपड़े खराब हो गए। राजा जब हाथ धोने के लिए गया तो वह वहां से बाहर चला गया तो फिर रानी ने उसको बुलाया। रानी ने कहा–वह दिन तो खराब गया और आज संभाल। सेनापति ने कहा–रानी साहिबा! मैं आपको बताता हूं। मैंने आपसे केवल आधा घंटा ही लगभग बातें की थी। मैंने घटिया कर्म नहीं किया, सिर्फ बातें ही की थी। बात करने से ही मुझे एक घंटे का नर्क मिला था। आज तक भी मेरे न तो कपड़े ही ठीक हुए हैं और न बदबू ही गई है। यदि मैंने तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार कर लिया तो मैं नर्क का कीड़ा बनूंगा।

शायद गरीब दास की वाणी है या मनुस्म ति में है। मैंने तो किसी महात्मा से सुनी थी कि एक बार भी यदि गंदे विचार करके पराई स्त्री से बोलता है तो उसको एक करोड़ दिन नर्क भोगना पड़ता है। सोचों! एक करोड़ दिन के कितने साल होते हैं? तैंतीस हजार वर्ष होते हैं मेरे विचार से तो।

मैं तो सुनी हुई बातें कहता हूं। जो गुरु बनकर अपने चेलों का धन लूट कर खाता है उसको दो करोड़ दिन नर्क भोगना पड़ता है। अगर प्रमाण लेना चाहते हो तो मेरे साथ में आ जाओ। प्रमाण के बिना मैं बात नहीं किया करता। अगर हम संत होकर चेलों का खाते हैं तो हमें कम से कम छः घंटे अभ्यास करना चाहिए। तीन घंटे तो हम अपने शिष्यों को बांट देते हैं, जिनका अन्न खाते हैं और दो तीन घंटे की हमारे पास पूंजी रह जाती है। इसीलिए छः घंटों में अभ्यास से काम चल जाता है। अगर स बारे में कोई कहता है कि आप तो गलत बोलते हो। प्रमाण चाहिए। कहते हो कि वह महात्मा है और कुछ भी कर सकता है। सो वह कोई सांड तो नहीं छोड़ दिया है कि वह कुछ भी करता रहे। ये गलत बातें हैं। वह कुछ भी कैसे करेगा? कबीर और दादू ने भी ऐसी मनमानी नहीं की। पलटू और नानक ने भी ऐसा नहीं किया। वे जागते रहे। इसी कारण से उन्होंने वह कुछ नहीं किया। जो सोये पड़े हैं वे अब भी सब कुछ करते हैं और पहले भी वे मनमानी कर गए हैं। और भी। सतगुरु बनकर भी सो गए हैं। उनमें कोई तो जहर खाकर मरा या किसी ने जेल काटी। कोई कोढ़ी होकर मरा और कोई बरबाद होकर मरा। वे सोए रहे और उन्होंने संसारियों का धन खाया। मैं तो घटिया बात नहीं कहता। जिसे मेरी बात कड़वी लगती हो तो वे उठ जाएं।

मैं आप लोगों की इज्जत की बातें करता हूं। आप लोगों को समझाने की बातें करता हूं। मेरी दो चार बार की कही हुई बात है कि संत की तो दो ही बातें हैं–संत की बात पर विश्वास और दर्शन की प्यास। पर संत कैसा हो? जो सतगुरु दो रोटी नहीं दे सकता है वह मुक्ति कैसे देगा? सो ही मैंने आपको बताया है–

सोवतड़े नर गए चौरासी, जागतड़ी नै जुग जीता।

आगे कहते हैं–गुरु के भजन के बिन नहीं निस्तारा जाग–जाग नर के सूता। गुरु का भजन तो उसे ही कहते हैं जो गुरु सतलोक से आगे पहुंच गया है, उसी का नाम

सतगुरु है और अगर सतलोक से नीचे ही नीचे है तो उसका नाम गुरु है और उससे भी नीचे है तो उसको नाम ठग है और बदमाश है। वह तो विषय–विकारों का कीड़ा है आपने सुना होगा–**औ३म् गुरु है, सतनाम सतगुरु है, राधास्वामी कुल मालिक है।**

अब यही बात मैं आपको बताऊंगा क्योंकि सत्संग ही चल पड़ा है कि कबीर साहब मंजिलें–मंजिले किस तरह गए थे। कबीर साहब भी सभी बातें सीधी ही कहते गए थे। उनके अनुयायी हों तो इन्हें समझ लें अपने कान खोल कर। मैं भी ये बातें समझ कर अपने कान खोल कर चला था। अपनी लाइन पर पहले तो चाहे कबीर पंथी हो, चाहे राधास्वामी पंथी या दादू पंथी हो, पंथ किसे कहते हैं? ये समझो? यदि पंथ को समझ गए तो बेड़ा पार हो गया। पंथ रास्ते को कहते हैं। जब रास्ते में जंगल या वन आ जाएगा तो फिर कैसे रास्ता ढूंढोगे? तुम किधर से निकलोगे। उस वक्त तो दो ही चीजें मदद देंगी। तो प्रकाश ढूंढोंगे या किसी आवाज को सुनोगे। सो जिस पंथ में प्रकाश और शब्द का निशाना नहीं है, वे नर्कों में ही चले जाते हैं। वे सब सोये ही पड़े हैं। पंथ रास्ते को कहते हैं। रास्ता वही पवित्र है जिसमें दा मार्ग है–शब्द और प्रकाश। जिसमें शब्द व प्रकाश का पता नहीं देते हैं वह कभी अपने घर नहीं पहुंच सकता है। जंगल में चलने वाला यात्री, बियावान, उजाड़ में आ जाता है। अंधेरा हो जाता है तो वह बैठकर क्या सोचता है?

सब से पहले तो वह आवाज सुनता है कि आवाज किधर से आती है। या फिर वह किसी दीया या बत्ती के प्रकाश को देखकर ही चल सकता है। सो संतमत में भी पहले ये दो ही निशानियां हैं। उसे पंथी कहा जाता है और जिसे शब्द व प्रकाश का पता नहीं है, जिस लाइन में उसे मजहब कहो, उसे सम्प्रदाय कहो तुम्हारी मर्जी है कुछ भी कहो पर पंथ कभी भी मत कहो। पंथ तो रास्ते का नाम है और रास्ते का वाकिफकार होना जरुरी है और वाकिफकार भी तभी होता है जब सतगुरु की दया होती है तभी उस रास्ते का पता लगता है। बगैर सतगुरु की दया के कुछ भी नहीं होता है। आगे क्या कहते हैं–

गुरु के भजन बिन नहीं निस्तारा, जाग नर क्या सूता।
जाग त नगरी में चोर नहीं लागैं, झख मारेंगे यमदूता।।

जब बाहर कोई चौंकीदार या पहरेदार बोलता है तो गली में चोर नहीं आ सकता है। अगर चोर आता है तो चौंकीदार की मेहरबानी से ही आता है। सो चोरो का जाबता करने के लिया बाहर चौंकीदार है। इसी तरह अंतर का पहरा देने के लिए भी अंतर के चौंकीदार हैं। अंतर का सबसे बड़ा चौंकीदार नाम है। नाम भी धुनात्मक है। यदि तुम्हारी सुरत उस धुनात्मक नाम को सुनेगी तो तुम्हारे अब दुश्मन सो जाएंगे या भाग जाएंगे। उस धुनी को सुनकर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार सब के सब सो जाएंगे।

शील, संतोष, विवेक और विचार जाग जाएंगे। इन्हीं को लोग कहते हैं कि बसता शहर उजड़कर दीन्हों, उजड़ फेर बसाया हो। जो काम, क्रोध के भय में शील, संतोष आदि भाग गए थे वे फिर सुमरन के प्रताप से वापिस आ जाएंगे। सो उजड़ा हुआ शहर फिर से बस जाता है। ये हमारे मददगार है और वे पांचों दुश्मन हैं। सो उन चोरों को पकड़ने के लिए एक ही चीज है। वह है सुमरन। सुमरन भी कैसा? उस सुमरन का तार टूट न जाई। सो–

गुरु के भजन बिन नहीं निस्तारा।

वह गुरु का भजन कौन सा है? सतगुरु अपना कमाया हुआ नाम देते हैं। जो सतगुरु अपना कमाया नाम नहीं देगा, वह क्या करेगा? कई लोग नाम तो बता देते हैं। पर उनको पूछा जाए कि यह कौन सी मंजिल का नाम है? वे बेचारे घबरा जाते हैं। कई–कई नाम होते हैं। स्वामी जी की वाणी आती है कि मुरली की धुन सुन करके सब कुछ काबू में आ जाता है। पर हम मुरली की धुन सुनते–सुनते भी गिर जाते हैं। क्योंकि हम ठीक जगह तक पहुंचते ही नहीं हैं। हम नीचे रह जाते हैं। हम उरले ही व्यवहार में रह जाते हैं। उन लोगों को उस धुनी का पता ही नहीं चलता है।

मुरलिया बाज रही, कोई सुनै संत धर ध्यान।
जिन जिन सुनी यह बंसी, मरा सब मन का मान।।

वह बंसी सोहम् के देश में बजती है। सुनो! मैं क्या कहता हूं? उस बंसी के सुनने से मन के मान मर जाते हैं।

उनको शांति आ जाती है। परेशानी नहीं रहती है। उसमें बड़ी भारी शक्ति है पर है वह भी काल का देश। मैं आपको आज नई बातें बताऊंगा कि यह कबीर साहब की वाणी है, काशी में छपी है। वह बहुत अच्छा मोटा ग्रंथ है। मैंने मास्टर को दिखाया। इसने पढ़ा। मुझे पता नहीं किस की लिखी है। है कबीर साहब की। उसमें लिखा है कि सोह३ का जाप करने वाला कभी भी काल के मुंह से निकल नहीं सकता। मैं अपनी बातें नहीं कहता हूं। मैं कबीर साहब की कहता हूं। कोई देखना चाहता है तो मेरे पास आ जाना। सुबह ही मंगवा दूंगा। सो कबीर साहब ने मेरी बात भी सिद्ध कर दी है। मैं मंजिले–मंजिले पहुंचने की बात बताता हूं। यह काल का जाप है। इसके बारें में तो कबीर साहब ने भी कह दिया कि उस जाप का करने वाला कोई भी काल से निकल नहीं सकता। ये सब नीचे ही रह जाते हैं। सतगुरु के भजन के बिना निस्तारा नहीं है। मैं सतगुरु का भजन बताता हूं। तुम तो गुरुओं के भजन जपते हो। रहबरों के भजन जपते हो। शिक्षकों के भजन जपते हो। पर सतगुरु कहां हैं? सतगुरु तो सतखण्ड में जाकर ही मिलता है। छठे चक्कर से नीचे तो एक भेषी मिलता है। एक टेकी मिल जाता है। फिर साधु मिलता है। फिर हंस और परमहंस मिलता है। फिर संत और फिर परमसंत मिलता है। इसीलिए कबीर साहब ने परमसंतों की बड़ाई की है। हंस परम हंस तो सोहम् के देश में रह जाते हैं। कबीर साहब ये बातें कहते हैं। मैं नहीं कहता। मैं तो आपको शिक्षा देता हूं। इसीलिये कहते हैं कि सतगुरु पूर्ण मिल जाता है तो इनसे आगे निकाल ले जाता है। सो ही कहा है कि गुरु के भजन बिन नहीं निस्तारा। गुरु का भजन किसे कहते हैं। ये सतगुरु का भजन है। आगे चलो, सतगुरु का भजन तो पूर्ण होता है। वह कभी भी खंडित नहीं होता है। कबीर साहब भी उसे क्या कहते हैं?

आदि नाम, अजर नाम, अदली अकाश नाम, पाताल। शब्द सिंध नाम। याही नाम से जीव का काम, खुली कुंजी खुले कपाट, पांजी निरखी सुरत के घाट, भ्रम भूत का बांधा गोला, ताहिं कारण धर्मदास बोला, कहे कबीर वचन प्रमाण।

यहीं शब्द से हंसा लोक समान, सतनाम सतनाम।

क्या सोहम् सतनाम है। इससे आगे चलिए फिर सतनाम का पता लगेगा कि सतनाम तो सारी दुनियां की जान है। उस सतनाम का उपदेश ही धर्मदास को मिला था और किसी को मिली भी नहीं। मैं आप को बताता जाऊंगा। आगे कहते हैं–

जप कर, तप कर, करोड़ जतन कर काशी में जाप करौंत लीता।

कबीर साहब कितने बेधड़क संत थे। वे कहते हैं जप करने से मुक्ति नहीं होगी। अगर कोई बोलना चाहे तो बोल लो। जप करने से मुक्ति नहीं होती। कितने ही कहते हैं कि मेरे करे कराए जाप पड़े हैं, मैं तुझे दे दूंगा। ये ले लो क्या ऐसी बातें कहते हैं कि नहीं? जपकर और फिर तप कर। कितना तप करें? विश्वामित्र जैसा तप करने वाला तो कोई नहीं। उसने अठासी हजार वर्ष तक तप किया। उसकी क्या दशा हुइ? उसने तो न्यारा स्वर्ग बना लिया था। फिर भी दुर्दशा हुई। धड़ाम से काल के घर में आकर फंस गया। जप कर और तप कर काशी में करौत ले लेना। पर मरने के बाद मुक्ति तो नहीं बिना भजन के मुक्ति अगर होगी तो भजन से ही होगी। मैंने दिन के सत्संग में कहा था कि शब्द के बिना तो वापिस आदमी का चोला भी नहीं मिलेगा। जिसको शब्द का पता नहीं और शब्द के रास्ते पर चल नहीं रहा है तो आदमी का चोला भी नहीं मिलेगा। ये और बता देता हूं। क्योंकि आदमी का चोला तो छठे चक्कर से उपर अगर मन की बैठक है तब मिलेगा। मैं नहीं कहता हूं। कबीर साहब कहते हैं–

रूक गए कंठ दसों दरवाजे मच गई ध्यारी रे।
मनवां नांहि विचारी रे, लोभीड़ा नांहि विचारी रे।।

इसीलिए लोग छठे चक्कर से नीचे–नीचे धोखा खाकर मर जाते हैं और ये नीचे के जो जाप हैं, सभी काल माया के हैं। जो पहले नाभि से हिलोर उठाया करते थे, उसको पराबाणी कहते हैं। नाभि से हिलोर उठाकर फिर ह दय में आकर उसे परा–पसन्ती कहते हैं और कण्ठ में उसे मध्यमा कहते हैं। जुबान से जो वाणी आती है उसे बैखरी कह देते हैं।

कबीर साहब तो कहते हैं कि **चौबानी, हम न मानी।** इस चौबाणी को नहीं माना है। यह निचला व्यवहार है। अगर इनसे आगे चलना चाहते हो तो ऊपर को चलो और नीचे सब ही काल माया की हद है। जब इनसे ऊपर चलोगे तो पता चलेगा। ये चारो ही वाणी नीचे रह जाती है। आप बताओ, कब्रें खोदने से तो मुर्दे ही निकलेंगे और कुछ भी नहीं मिलता है। छठे चक्कर से नीचे तो कब्रें ही खोदना है जो नीचे का जाप किया जाता है। छठे चक्कर से ऊपर जो जाप किया जाता है, उसको क्या कहते हैं? उससे ऋद्धियां–सिद्धियां भी नहीं मिलती हैं। वे भी जती को ही मिलती हैं। वे भी सच्चे आदमी को मिलती हैं। अगर सारी जिन्दगी सोहम्–सोहम् करता रहा और दूसरे की निंदा करता रहे उसे कुछ भी नहीं मिलेगा। खाली रह जाओगे। काल खा जाएगा। इन बुजुर्गो की निंदा करना बहुत बुरा है। कई देवी–देवताओं की निंदा करते हैं। मैं सीधी बातें बताता हूं। मैं निंदा नहीं करता हूं। मैं तो ये कहता हूं कि उसकी पूजा करो, ये फल मिल जाएगा। पर सतगुरु की पूजा से तो सतगुरु में ही समा जाओगे। जो आज तक हमने नहीं देखा है उसे आप कैसे पकड़ोगे? कोई ऐसा प्रमाण है? कोई भी नहीं मिलेगा। इसीलिए संत महात्माओं की वाणी कहता हूं। तीन चीजें वक्त की ही काम देती हैं। वक्त का हाकिम, वक्त का हाकिम और वक्त का संत सतगुरु। पिछले महात्मा पूर्ण हुए सच्चे हुए। लेकिन वे अब तो काम नहीं देंगे। अब तो वक्त का कोई संत सतगुरु भेदी मिल जाए तो वही काम देता है। वेदान्ती कहते हैं कि ब्रह्मनिष्ठ गुरु हो। संत कहते हैं शब्द भेदी होना चाहिए तभी काम बनेगा। लुकमान हकीम बहुत बड़ा हुआ है। पर उससे तो आज कोई बीमारी ठीक नहीं करा सकता। आज तो वक्त का हाजिर हकीम ही ढूंढना पड़ेगा।

अंग्रेजों का राज तो बहुत ही अच्छा था। पर आज तो वक्त के हाकिम की ही बड़ाई करनी पड़ेगी यदि काम करवाना है तो। सो तीन चीजें वक्त की ही काम देती हैं। मैंने आप लोगों को बताया, संतों के भजन बिन नहीं निस्तारा। जप करो, तप करो, काशी में जाकर करौंत ले लेना और भी चाहे कितना ही कुछ भी कर लेना। इस आधार पर परसराम का दोहा भी काम करता है।

नाम लिया जिन सब किया, योग यज्ञ आचार।
जप, तप तीर्थ परसराम, सभी नाम की लार।।

अर्थात सारे जप और तप, तीर्थ, व्रत, होम यज्ञ नाम के पीछे हैं। जिसने नाम का सुमरन कर लिया, सब कुछ ही पा लिया। बातें मैंने पहले बता दी हैं कि नाम तो जिस भी मंजिल का होगा उतना ही काम करेगा। अगर नाम छठे चक्कर से नीचे का होगा तो कुछ भी काम नहीं करेगा। सो अगर सतलोक से नीचे का नाम है तो भी काम नहीं करेगा। हां, निचले से ऊपर और ऊपर से ऊपर, इस तरह से पहुंच जाओगे पर सतखण्ड में पहुंचे बगैर मुक्ति नहीं हो सकती। आगे कहते हैं–

जोगी होग्या जटा बढ़ा ली, अंग रमा ली भभूता।
दमड़ी कारण काया जला ली, योग नहीं तेरा हठ झूठा।।

अब कबीर साहब कहते हैं कि जोगी भी हो गया जटा रखा ली अंग रमाली। तुमने देखे होंगे कि शरीर पर भभूत रमा कर कितने घूमते हैं।

बिना वसीले नौकरी बिना बुद्ध की देह।
बिना ज्ञान का मोडिया, फिरे लगाए खेह।।

इसीलिए अपना जीवन बिताया। गीता में क ष्ण भी इनकी निंदा करता है और कहता है कि इससे भी मुक्ति नहीं होती है। जटा बढ़ाने से तो परमात्मा नहीं मिलता है। कबीर साहब कहते हैं–

जटा के बढ़ाए कौन-कौन तिरेगे, तिरजा क्यों न मोर। जिनकी लम्बी-लम्बी पर है।
राख के रमाएं साधु कौन-कौन तिरगे,
तिरजा क्यों न गधा, जिसका कुरड़ी में ही घर है।

कोई कहता है कुत्ता जिसका हारे में घर है। कुत्ते तो राख में ही लोटते रहते हैं।

शंख के बजाए साधु कौन-कौन तिरगे।
तिरज्या क्यों न गधा, जिसका शंख सा ही गल है।।
गंगा के नहाए, कौन-कौन तिरगे।
तिरज्या क्यों न मैंढक मच्छी, जिनका गंगा में ही घर है।

कबीर साहब बड़े बेधड़क संत थे। वे तो खुली ही

कह गए। नहीं समझते तो तुम्हारी मर्जी है। वे कहते हैं कि जटा बढ़ा लेने, भभूत रमा लेने, से परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती। अगर हम कपड़े त्याग दें और नंगे घूमते रहें तो भी पशुओं का भी मिल जाएगा। परमात्मा नहीं मिलेगा। ऐसा करने से परमात्मा मिलता तो परमात्मा तो अपने विचार पवित्र करके कोई पूर्ण सतगुरु मिलने से मिलता है। ऋद्धियां–सिद्धियां मिल जाती हैं। स्वर्ग–वैकुण्ठ मिल जाते हैं। परमात्मा मिलता है तब तो सारे संशय ही दूर हो जाते हैं। कबीर साहब की वाणी बड़ी पवित्र और ऊंची है। हरेक आदमी गाता है कि परमात्मा से मिलना है तो इन चीजों को छोड़ना पड़ता है। परमात्मा तो शांति से ही मिलेगा। सुरत–शब्द के अभ्यास से मिलेगा। अपने विचार पवित्र करने से मिलेगा। कबीर ने तो खुला कह दिया। मैं कई बार दोहा करता हूं–

कबीर-कबीर क्या करो, सोधो अपना शरीर।
पांचों इन्द्री वश करै, ता का नाम कबीर।।

अर्थात तू अपनी पांचों इन्द्रियों को काबू में कर ले। तू खुद ही कबीर है। अगर तुम कबीर बनना चाहते हो तो बस बन गए कबीर। पर पांचों इन्द्रियां विकार करती हैं और न्यारी–न्यारी मारी–मारी फिरती हैं अगर कोई इन्द्रियों के आधीन रह कर कहे कि मैं कबीर हूं तो वह तो गिर जाएगा। शरीर में कीड़े पड़ जाएंगे। ऐसे–ऐसे पापी मरते हैं सड़कर जो झूठे कबीर बनते हैं। झूठे स्वामी जी, झूठे दादू जी जो भी बनते हैं, वे गिर जाएंगे, मर जाएंगे लड़–लड़ कर। बुरी दशा ऐसी पापियों की होती है। अब आगे कहते हैं–

जिनकी सुरता लगी भजन मैं काल जाल से नहीं डरता।
अधर अणी पर आसन रखते, वे योगी हैं अवधूता।।

क्र क्र

क्र अब जिनकी सुरत भजन में लग गई, वे काल से क्यों डरेंगे? वे तो अधर अणी पर अपना आसन लगा लेते हैं। अधर अणी छठे चक्कर पर बता दी है कबीर साहब ने। कई गोरखनाथ की मिशाल बताते हैं। इसे अधर अणी कहते हैं। गोरखनाथ ने कबीर साहब के पास आकर धूना लगा दिया और त्रिशूल रख कर उसके ऊपर बैठ गया और उसने कहा कि कबीर ऊपर आ जा। नीचे तो बदबू आती है। कबीर साहब ने तानी अपनी कूकड़ी ऊपर फेंक दी और उसके तार के साथ–साथ ऊपर चला गया और ऊपर जाकर गोरखनाथ से कहा–गोरख ! ऊपर आ जा। नीचे तो बदबू आती है। अब चुपचाप गोरख नीचे उतर आया। गोरखनाथ का आसन तो छठे चक्कर का ही था। इसे त्रिशूल कहते हैं। नाक की हड्डी तो डंडी है और ये तीन तिलक त्रिशूल का नक्शा है। समझते होंगे? इसी स्थान पर गोरख का आसन था। कबीर साहब ने कहा–ऊपर आ जाओ। क्योंकि छठे चक्कर से नीचे तो गंदगी है। जो ये नीचे के चक्र हैं ये तो मैले हैं। गोरखनाथ ने यही कहा था कि कबीर ! ऊपर आ जाओ। नीचे तो बदबू आती है। अब कबीर साहब नीचे से अपनी सुरत समेट कर मकड़ी के तार की तरह फिर सतखण्ड में ले गया। फिर गोरख से उसी तरह बात कह दी कि गोरख ! ऊपर इा जाओ। नीचे ठीक नहीं है। तत्काल उसने अपनी सुरत नीचे उतार ली। गोरख ने कहा–आप भी नीचे ही आ जाओ। बातें करेंगे। कबीर का तजुर्बा छठे चक्कर तक का था। उन्होंने अपने तजुर्बे बताए थे। इन लोगों ने और ही बातें बनानी शुरु कर दी। फिर उन बातों को भूल कर लकीर के फकीर बन गए और अनाप–शनाप बातें करनी शुरु कर दीं। उस वक्त कबीर साहब और उनकी बातें हुई। बात होने पर गोरख को कबीर गुरु मानना पड़ा। गोरखनाथ ने कहा–

जल की तुंबी रूखां लागी, भव सागर के तीरा।
गोरख का संशय मिट गया, सतगुरु मिले कबीरा।।

अर्थात् वे कबीर साहब की शरण में चले गए। उनका संशय मिट गया। उन्होंने कहा–वाह! आपने मेरा भ्रम दूर कर दिया। क्योंकि मैं तो इस त्रिशूल पर ही (छठे चक्कर पर ही) आसन लगाता था। इससे आगे और भी रास्ता बता दिया आपने। सो मंजिलें–मंजिलें जैसा उन्हें शिष्य मिला वैसी ही शिक्षा कबीर साहब देते

चले गए। जो सतगुरु का प्यारा और पूर्ण शिष्य मिला, उसको उन्होंने पूर्ण ही शिक्षा दी। वह आगे बताऊंगा। आगे कहते हैं–

सोवतड़े नर गए चौरासी, जागतड़ो ने जुग जीता।

रामानन्द के कहत कबीरा, मंजिले-मंजिले जा पहुंचा।।

वहीं बातें फिर आ गई। कबीर साहब कहते हैं मंजिलें–२ जा पहुंचा। यही मैं आपको बताऊंगा कि कबीर साहब के बहुत आदमी मेरे पास आए और मुझ से पूछा किस तरह पहुंचा? ये आपके समझने की बातें है। कबीर साहब को पण्डित लोगों ने घेर लिया और कहा–तेरा गुरु कौन है? निगुरु दोहे लिखे और बड़ी–बड़ी वाणी बोलते हो तेरा गुरु कौन है? उन्होंने कहा कि कुछ दिन ठहर जाओ, बताऊंगा। वे ठहर गए। दूसरे ही दिन तालाब पर जहां रामानन्द नहाने के लिए जाया करते थे वे उस तालाब पर पहुंच गए। रामानन्द जी छोटी जाति से नफरत किया करते थे। ऐसा ही काम था। वे तालाब पर जाकर एक पैड़ी पर लेट गए तब रामानन्द जी नहाने के लिए आए। ये आपके बड़ों की बातें मैंने किताबों से ही सुनी हैं। वह लेटा हुआ था और रामानन्द जी नहाने के लिए तालाब में उतरे तो उनका उसके ऊपर पांव टिक गया। पांव टिकवाने के लिए ही तो वे गए थे। जब उनका पांव टिका तो कबीर साहब ने रोना शुरू कर दिया। रोने का तो बहाना ही था। तब रामानन्द उसी वक्त उसके सिर पर हाथ रख दिया और कहा बस! बेटा, राम–राम कर। बस,बेटा! राम–राम कर। अब कबीर साहब का तो काम बन गया गुरु और क्या देता है? राम नाम का मंत्र दे दिया और सिर पर हाथ रख दिया। इस बात को लेकर काफी लोग धोखा खा जाते हैं और धोखे मे ंरह जाते हैं। अब भी काफी रोजगारी लोग यही कहते हैं कि बस यह नाम दे दिया और जपा करो। अरे! मंजिलों का पता भी कोई बताया कि नहीं? धुनियों का पता भी दिया कि नहीं? अंतर का मार्ग कैसे तय करना है, यह बताया कि नहीं? जो बेचारे नहीं बताते तो वे घिघियाते रह जाते हैं। इसीलिए

पंडित का पढ़ाया, पाधा और पाधे का पढ़ाया आधा। टिड्डी फिड़का फुर्र। इस तरह वे अपनी चाल को भूल जाते हैं। गिर जाते हैं। क्योंकि कह देते हैं कि कबीर साहब के सिर पर हाथ रखा था और राम–नाम का मंत्र दिया था। अरे ! कबीर साहब तो पूर्ण पुरुष थे। तू पूर्ण है क्या पगला ! उन्हें तो मर्यादा के अनुसार ही गुरु करना पड़ा। जब उन्होंने ऐसा किया तो कई शिष्य कबीर साहब के बन गए। वे कहते हैं कि हम तो कबीर साहब के हैं और रामानन्दी हैं। राम नाम का जाप करते हैं। वे कबीर साहब का नाम लेते हैं। सर्दी में मेरे पास बहुत आदमी आते हैं। मैं पूछता हूं कि कौन हो? वे कहते हैं कि रामानन्दी साधु हैं। रामानन्दी किस तरह हो? कि हम तो रामनाम का मंत्र जपते हैं। कबीर साहब को रामनाम का मंत्र मिला था। कबीर साहब ने उन्हें भी राम नाम का जाप बता दिया और जब आगे का अभ्यास करके जब वे ह दय के चक्र पर पहुंचे तो वहां 'ओहं–सोहं' का जाप बता दिया। शब्द में भी आता है जपले 'औहम्–सोहम्' जापा। जैसे–जैसे मिलते गए वैसे ही वे बताते गए। जब जो आगे गए तो सोहं का बता दिया। काफी लोग ऐसे भी जिज्ञासु मिले तो उन्हें सोहं का नाम दे दिया। पर सोहं काल है और काल की हद में हैं। कबीर साहब ने खुद कहा है कि सोंह का जाप जपने वाला कभी भी काल से बच नहीं सकता। मास्टर को मैंने दोहा बताया कि देख ले यह। अब तीनों मंजिलों के बारे में और सोहं बता दिया है। जब आगे का फिर कोई अधिकारी मिला उसको सतनाम का बता दिया और आगे का मिला उसे संत कबीर बता दिया। पर धर्मदास जैसा पीछे लगने वाला मिला तो उसे सच्चा नाम ही बताना पड़ा और वह सच्चा शब्द कैसे बताया? सो सुनो। धर्मदास कबीर साहब के पास आया और कबीर साहब ये बातें कह रहा था कि मंजिलें–मंजिलें जा पहुंचा। अब कितनी मंजिलें तय कर ली? वह नाम देता चला गया और उनके कुछ अनुयायी तो अब भी मैं गिना सकता हूं। कुछ मजहबों मतों वाले तो अब हैं।

जैसे अब स्वामी जी महाराज जैसे भी बहुत बन गए हैं। इसी तरह से उनके भी इन लाइनों पर बहुत बन गए हैं और वे सब अपने आपको कबीर पंथी कहते हैं। कबीर पंथ का उन्हें पता भी नहीं है। राधास्वामी वाले भी बहुत बन गए हैं। पर उन्हें राधास्वामी धाम का तो पता ही नहीं है, अगर उनसे पूछा जाए तो। पर आप तो पूछ सकते हो कि क्या आप ही इनका ठेका लेकर आए हो? नहीं, यह तो गलत बात है। मेरा सतगुरु पूर्ण था और उनकी दया थी। उनकी दया से ही मैं बता देता हूं। फिर मैं किसी चीज का दावा भी नहीं करता। मेरी जितनी सीमा है उतनी बता देता हूं और कोई बड़ा ठेकेदार हो तो वह और कोई बता दो। कोई भी ठेकेदार नहीं है। कबीर का जो हक था वह मेरा भी हक है। स्वामी जी का हक था तो वह मेरा भी हक है बताने का। इसीलिए मैं आपको बता देता हूं। कबीर साहब के पास धर्मदास आया। क्योंकि वह जिज्ञासु था और इतनी तो किसी ने भी चिंटी की खाल नहीं उधेड़ी। उसने कहा–महाराज ! मुक्ति का रास्ता बताओ। मुक्ति कैसे होती है? कबीर साहब ने कहा–

औ३म् नाम सब से बड़ा है इससे बड़ा न कोय।
जो इसका सुमरन करे तो शुद्ध आत्मा होय।।

औ३म् छोटा नहीं है, तीन लोक में औ३म् स्वर्ग और वैकुण्ठ भी देता है। तीन लोक में औ३म् बहुत बड़ा है। पर मुक्ति के लिए नहीं है। आपमें यदि कोई मुक्ति के लिए एतराज करना चाहता है तो सुन लो। वह औ३म् तीन गुणों में ही रह जाता है। औ३म् तीन गुणों में ही रह जाता है। औ३म् की वहां धुनी होती है और उससे आगे तो सोहं की धुनी भी आ जाती है। सो सोहं, औ३म् आदि सभी से आगे है। पर है सोहम् भी काल का देश है। इसीलिए उसने कहा–औ३म् का तो मुझे पता लग गया, इस औ३म् से तो आत्मा शुद्ध होती है महाराज! मुझे तो वहीं नाम बताओ, जिससे उद्धार हो जाए। फिर संसार में, मैं न आऊं। कबीर साहब ने कहा–

औ३म् नाम रटते रहो जब तक घट में प्राण।
कबहुं तो दीन दयाल के भनक पड़ेगी कान।।

धर्मदास ने कहा–महाराज जी! अब तो आपने खुलासा ही कर दिया। वह दीन दयाल व कर्त्ता धर्त्ता तो कोई और ही है। जो दीनों का दयाल है मैं तो उसी से मिलना चाहता हूं। मुझे तो वही दीन दयाल बता दो। कबीर साहब ने कहा कि अरे, पगले! रहने दो। मैं तो जीवों को इसी तरह से बताता जा रहा था। तू क्या पूछेगा? तब कबीर ने कहा–

प्रगट कहूं तो मरिहूं तुर्कानी का जोर।
बात कहूं अगम लोक की, गह कर पकड़े चोर।।

फिर कहते हैं–

औ३म् नाम कर्ता नहीं, इसे कर्ता मत जान।
साचा शब्द कबीर का तू परदे ही में जान।।

तब धर्मदास ने कहा कि महाराज जी! आप परदे में ही बता दो। यह नाम कबीर साहब ने धर्मदास को ही बताया था कि किसी को नहीं बताया। वही एक जिज्ञासु उन्हें मिला था। तुम्हारे पास कोई और इतिहास हो तो मेरे पास ले आओ। धर्मदास से बढ़कर उसका कोई भी गुरुमुख नहीं था और तो सारे ही भरमा दिए। उस गुरुमुख को ही नाम बताया है।

सो लोग सोहम् में ही फंस गए। जो सतनाम जपते हैं उनसे पूछें कि सतनाम की धुनी कहां होती है तो वे क्या बताएंगे? कई राधास्वामी मत वाले भी चकरा जाते हैं। उनसे पूछो कि सतनाम की धुनी कहां से होती है? क्या पता है? बेचारे क्या करें? कोई कोई बता भी देता है। सो ही उसने कहा–महाराज ! परदे में बता दो। अब उसने सोचा–जिज्ञासु है पूछेगा। यह कबीर की वाणी मेरे पास है और साथ ही अर्थ भी कर रखा है। सुनो इसे आकर।

कबीर साहब कहते हैं–

कबीर धारा अगम की सतगुरु दई बताय।
ताहि उलट सुमरन कर, स्वामी संग मिलाय।।

यह राधास्वामी बन गया। यह कबीर साहब का उपदेश है जो उन्होंने धर्मदास को दिया। जो कोई

गलत अर्थ लगाते हैं तो वे कमीने हैं। बाबा सावण सिंह ने कहा था कि राधास्वामी नाम को जो वर्णात्मक कहता है उसे सतगुरु पूरा नहीं मिला। वही मैं कहता हूं कि जो इसका अर्थ गलत लगाता है वह कमीना और गिरा हुआ है। वह तो कुत्ता है। कबीर की वाणी का गलत अर्थ लगाने वाला १४ जन्म नर्क भोगेगा। जैसे वेदों का जो गलत अर्थ लगाता है वह सात जन्म नर्क भोगता है। संतों की वाणी का गलत अर्थ लगाने वाला चौदह जन्म नर्क भोगेगा। मैं आपको बताता हूं कि कबीर साहब की वाणी मेरे पास है। तब उसने ये कहा–

कबीर धारा अगम की सतगुरु दई बताय।
ताहि उलट सुमरन कर, स्वामी संग मिलाय।।

धर्मदास ने कहा–महाराज जी! मैं समझ गया। कबीर साहब ने कहा–

धर्मदास! तोहे लाख दुहाई।
सार भेद बाहर न जाई।।

सो धर्मदास के मुंह में कुल्ला ठोंक दिया। उससे आगे बात ही नहीं चली। दादू जी की वाणी पढ़ो। उसने ये कहा है–

स्वामी तो सतलोक है, राधा त्रिलोकी माहिं।
दादू दोनों एक कर, जन्म-मरण मिट जाहिं।।

गुरु नानक साहब ने आगे कहा है–

अगर अपार बेअंत मेरा स्वामी।
सब का कर्ता मेरा स्वामी।।

उस स्वामी के पास मंजिले–मंजिले ही पहुंचना है। स्वामी जी महाराज ने भी पांच धुनियों का वर्णन किया है। कइयों ने उन पांच धुनियों के पांच नाम बना लिये। सिक्खों ने पांच प्यारे बना लिए। हम संतों ने पांच नाम बना लिये। सनातनियों ने पंचाम त बना लिया। मुसलमानों ने नासुत–मल कुत, जबरूत, लाहुत, हुत बना लिए। ये पांच अक्षर बना लिए। सारे ही उस चाल को भूलते गए और स्वामी जी ने तो इस तरह चाल चली थी कि

पांचनाम का सुमरन करो और शाम-सेत में सुरत धरो।

सुमरन करो। सुमरन उसे कहते हैं कि उसका निशाना लेकर चलते रहो। उन्होंने यह नहीं कहा कि पांच नाम का जाप करो। सुमरन करो। सुमरन दूसरी वस्तु है। जाप दूसरी वस्तु है। जैसे मोह दूसरी वस्तु है और प्रेम दूसरी वस्तु है। प्रेम सुरत करती है। मोह मन करता है। इनकी न्यारी–न्यारी चाल है। मन काल का वजीर है। सुरत दयाल की अंश है। इसलिए वह प्रेम करती है मोह नहीं। मन प्रेम नहीं करता। वह मोह करता है। सो हम सारी दुनिया से मोह करते हैं। मोह का खेल यही है कि इस में स्वार्थ है। जिसका स्वार्थ सिद्ध नहीं होता है तो हम सब उसे त्याग देते हैं। सुरत प्यार करती है, वह मोह नहीं करती है। जब शब्द एक बार सुरत के सम्पर्क में आ जाता है तो वह उसे त्यागती नहीं। सो कबीर साहब के शिष्य धर्मदास थे, उनका ही शब्द था और वही स्वामी जी ने कहा। स्वामी जी ने क्या कहा–

सतलोक सब नीच निचानी।
वाह मेरे प्यारे राधास्वामी।।

बाबा सावण सिंह जब नाम दान लेने के लिए गये तो वे बाबा जैमल सिंह के पास गये। उन्होंने लिखा है। उन्होंने कहा–महाराज! यह नया सा नाम मुझे न देना। महाराज जैमल सिंह ने पूछा–कौन सा नाम? उन्होंने कहा–यही राधास्वामी। जैमल सिंह ने कहा–फिर एक संत ने क्या जुल्म कर दिया जो असलियत बता दी। जब तुम सभी स्वामी–स्वामी कहते हो। उसी स्वामी के आगे उन्होंने राधा को जोड़ा है। तो कोई बात नहीं है। तब उन्होंने सार वचन पढ़ा–

स्वामी आदि सुरत का नाम।
स्वामी आदि शब्द निज धाम।।
राधा प्रीत लगावन हारी।
स्वामी प्रीतम नाम कहा री।।
सुरत शब्द और राधास्वामी।
दोनों नाम एक कर जानी।।

सो गुंजार में से धुनी निकलती है, उसकी न्यारी आवाज होगी। वह स्वामी में से निकल कर राधा बन

गई है। वह स्वामी में से निकल कर राधा बन गई है। सो राधास्वामी नाम कुल मालिक का निजनाम है। इसको मूल मंत्र कहा जाता है। यही मूल मंत्र मैंने आपको बताया है कि कबीर का था।

असली अकाश नाम .....।

यहीं मूल मंत्र गुरु नानक साहब ने कह दिया।

एको, सतनाम कर्ता पुरुष निर्भय निर्वैर अकाल मूर्त, अजूनी सैभं गुरु प्रसादी।

यही स्वामी जी का मूल मंत्र है–राधास्वामी। इसलिए राधास्वामी नाम कुल मालिक का निज नाम है। कबीर साहब ने इसी को कहा है कि मंजिलें–मंजिलें जा पहुंचा। मंजिलें–मंजिलें किस तरह? मंजिलों के कितने ठेके बताए हैं? उन ठेकों को तय करता–करता जा पहुंचा। आप कोई प्रश्न उठा सकते हो कि वे कुल मालिक थे। मैं भी कहता हूं कि वे कुल मालिक थें मैं प्रश्न करने वाले को बताता हूं कि उनकी वाणी को समझो वे क्या कहते हैं–

काशी में प्रगट हुवे, रामानन्द चिताए।
साहेब का परवाना लेकर हंस उबारण आए।।

साहेब का परवाना तो उसकी चिट्ठी ही है। कबीर साहब कहते हैं कि मैं उस सतपुरुष की चिट्ठी लेकर आया हूं और हंस उबारने के लिए आया हूं। यह तुम्हारी ही वाणी कहती है। मेरी नहीं है। दूसरी वाणी में कबीर साहब कहते हैं–

हम धुर घर के भेदी, लाए हुक्म हजूरी।

सो कबीर साहब तो कबीर ही थे। इन वाणियों को चक्कर कटाओ तो कितने ही कटाते रहो। सो कबीर साहब ने तो यह भी कह दिया है–

इतनी वाणी मैं रची, जितना बालू रेत।
इस पापी जीव के एक न आई हेत।।

क्या ये लोग जो सब जानने का दावा करते हैं कुछ करते भी हैं? अगर अभ्यास करें तो पता लगे। जीवन सफल हो जाए। दो ढाई घंटे ध्यान में बैठने की कोशिश करो। देखो आहिस्ता–२ क्या कुछ मिलता है और किस तरह पहुंचते हो अपने घर में। पर हम एक मिनट ही बैठते हैं कि कमर में खुजली होने लग जाती है। टांगे दुखने लग जाती हैं। दूसरों की निंदा करने में सारी रात बिता देते हैं। संतों की जो निंदा करता है वह बड़ा पापी होता है। संत तो धुर घर के भेदी होते हैं। जितने भी संत आए वे धुर धर के भेदी हैं और हुक्म हजुरी लेकर आए हैं। जो उनके सम्पर्क में आ गए उनको वे ले जाएंगे। पर उन्हीं को ले जाएंगे जिन्हें अंतर की पांच धुनियों का भेद है। गुरु नानक साहब ने भी कहा है कि

घर में घर दिखाए दे, सो सतगुरु पुरुष सुजान।
पांच शब्द धुनकारे, धुन बाजै शब्द निशान।।

क्या उन पांच शब्दों को कबीर पंथी निंदा करते हैं। कहते हैं–

पांच नाम वाला उद्धार न होई।

ये गलत बातें हैं। अगर पांच नाम का पता नहीं होगा तो मोक्ष में कोई जा ही नहीं सकता है। पांच धुनियों का पता होगा तभी राधास्वामी धाम में पहुंच सकता है। अगर पांचों धुनियों का पता नहीं है तो किसी का कभी भी उद्धार नहीं होगा। वे पांचों धुनी दादू, पलटू आदि सभी संतों ने अंतर में बताई हैं। उन धुनियों में फंसना नहीं है। उनका जाप करना है। उन धुनियों को मंजिलें–मंजिलें सुनते हुए जाना है। ये तो मैंने ध्वनियां बताई, वही कबीर ने इनमें जो ध्वनियां आती हैं इनको सुनते–सुनते ऊपर सतखण्ड में चले जाना है। इनसे आगे पहुंच जाते हैं। इस तरह जीवन सफल हो जाता है। कोई और बात बताओ नहीं तो एक शब्द सुना की छुट्टी कर दूंगा। किसी को कोई बात करनी हो तो मैं सवेरे फिर आ जाऊंगा बोल लेना। दिन में अच्छा मजा आएगा अगर कोई प्रश्न करना चाहे तो। पर मैं एक बात बता देता हूं कि प्रश्न वही करे जो विषयों से बचा हुआ हो। प्रश्न वहीं कर सकता है जिसे १८ मंजिलों का पता हो, जिसे अपने घर जाने का शौक हो और अपना जीवन पवित्र कर लिया हो। घटिया आदमी प्रश्न नहीं करे। क्योंकि घटिया के तो परमाणु ही गंदे होते हैं। सो सज्जन आदमी ही प्रश्न कर सकता है।

अगर प्रश्न न करो तो मेरी एक ही बात को समझ लो। अपने घरों में बहुत ही प्यार से रहा करो, जीवन सुधार कर रखो। जिसने नाम ले रखा हो चाहे कहीं भी ले रखा हो, ढाई घंटे ध्यान में बैठा करो। मैं भी पागल था। मेरे गुरु महाराज अच्छे थे, मुझे तो मेरे गुरु महाराज ने बचाया। मैं उनका झूठा प्रसाद लेने के लिए चलता तो वे कहते कि अरे पगले ! यह झूठन प्रसाद नहीं है तो हमारे झूठे टुकड़े हैं इनसे नहीं तिरोगे। हमारा झूठा प्रसाद तो हमारी जुबान से जो बात निकलती है, वह है उसे ह दय में रख लो। तिर जाओगे। सतगुरु तो यह शिक्षा देते हैं। मैं उन सतगुरुओं की तरह नहीं हूं कि भैंसे २० हजार की बिक गई तो एक हजार रुपये दे दो। ये तो जैसा दोगे, वैसी ही लोगे का व्यवहार। दसवां हिस्सा गुरु का यह है कि भजन करो। सुमरन ध्यान करो। कइयों को तो यही पता नहीं है कि भजन क्या होता है, ध्यान और सुमरन क्या होता है।

सो ही संतों ने स्वामी महाराज और हजूर महाराज ने सभी ने यही कहा कि इन तीनों चीजों गंगा, यमुना, सरस्वती को साथ लेकर चलो, ये तीनों सुमरन, ध्यान और भजन साथ ही होने चाहिए। आज कल के महात्मा तो एक–एक करके बताते हैं। इसी तरह जीवन गुजर जाता है और खाली रह जाते हैं। ये तो तीनों ही चीजें साथ चलती हैं। आप ही शनै–शनै तीनों स्वतहि बन जाते हैं। तीनों को ही लेकर चलते हैं। सुमरण करते समय भजन और ध्यान गायब रहते हैं। जब सुमरन करते–करते ध्यान में पहुंच जाते हैं तो भजन और सुरमन गायब हो जाते हैं और ध्यान करते–करते जब भजन में चले गए तो ध्यान और सुमरन भी गायब फिर भजन ही भजन रहता है। जब करोगे तब पता लगेगा और करने वालों को पता भी है।

दोहा-

क्या मुख हंसा बोलिए दादू रे दीजे रो।
जन्म अमोलक आपना चले अकारथ खो।।
बाबल भेजी रे बणज को गई डिगरिया भूल।
कुल ममता में आयके, ब्याज गवां दिया मूल।।

शब्द-

सुना सै हमने गुरु अपने का ज्ञान।
धूं से महीन पवन से झीना, ना वाके जीव न जान।
कब लग वहां का वर्ण बखानूं लो लागै ना रे ध्यान।।
द ष्टि-मुष्टि में आवै कौनी ना वाके पिंड प्राण।
देखते-२ नैना थकगे, सुनते-२ कान।।
हिन्दू तो वेदों में ढूंढे मुसलमान कुरान।
ये दोनों कागत में रहेंगे, हाथ न आया निजनाम।।
खसखस समाना मेरू समाना राई में खलक जहान।
चौदह तबक का गर्व निवारा, रहा था ठाम की ठाम।।
ता सुमरे भय काल न व्यापै पे पद है निर्वाण।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, मिट जांगे आवण जान।।

कबीर साहब की वाणी पर ये सत्संग था और यही कबीर साहब की वाणी मैंने आपको सुनाई। मुझे यह तो पता नहीं कली पूरी ली या कम ज्यादा रही पर कबीर साहब ने कहने में कसर नहीं छोड़ी। कितनी कही कि

ता सुमरे भय काल न व्यापे यह पद है निर्वाण।

उसके सुमरने से भय और काल नहीं व्यापता है। वह धुनात्मक नाम है उसके सुमरन करने से भय और काल नहीं व्यापता। सभी महात्माओं ने इशारे किए हैं। इस बात पर कि नाम से कोटि जन्मों के पाप कट जाते हैं। आपने सुना है–

रामनाम के लेत ही होत पाप का नाश।
ज्यों चिंगारी आग की पड़े पुरानी घास।।

वह परमात्मा का धुनात्मक नाम एक बार भी निगाह में आ गया और एक बार भी उसकी धुनी सुन ली तो कोटि जन्म के पाप कट जाते हैं। जैसे पुरानी तलवार मैंली पड़ी है और साण पर चढ़ते ही चमक उठती है। इसी तरह हमारी सुरत एक बार भी उस धुनी को सुन लेती है तो उसके सारे रोम–रोम तार की तरह से बज उठते हैं वह नाम बड़ी ऊंची दौलत है और उस नाम को दस–बीस मिनट तो कोई रख भी नहीं सकता। सो संत तो थोड़ी–थोड़ी देर में ही त प्त या खुश हो जाते हैं। फिर कबीर साहब कहते हैं–

नाम रती एक है पाप रती हजार।
रंचक घट में संचरे, जार करे सब छार।।

एक रती भर नाम, एक सैकिण्ड का नाम करोड़ो जन्मों के पाप को काट देता है। वह धुनात्मक नाम है। महाराज पं० फकीरचन्द जी कहा करते थे कि बेटा! मैं तो एक ही क्षण उस शब्द में ठहरता हूं। दो या तीन सैकिण्ड। उस समय मेरे दिल में आया कि ये क्या कहते हैं?

जब उन्होंने बताया तब मैं समझा–हां वह शब्द दूसरी ही चीज है। वह शब्द जिसका खुल जाता है उसका जीवन सफल हो जाता है। वैसे ये तू–तू, घूं–घूं तो असंख्य सत्संगी सुनते रहते हैं। पर इसे भी भागी ही सुनता है। हर किसी के बस के तो ये भी नहीं हैं। पर वह शब्द जब खुल जाता है तो मैं कई बार एक दोहा कहा करता हूं पलटू साहब का–

फूट गया आसमान शब्द की चमक में।
लागी आग गगन में, सुरत की चमक में।।
शेषनाग औ कमठ सब लगे कांपने।
अरे हां पलटू! सहज समाध की खबर नहीं आपने।।

ये तो सुन्न समाध की ही बातें बताई हैं। सो संतों, महात्माओं ने कहा है–

नारी हत्या, बालक हत्या, ब्रह्म हत्या जो हो।
एक बार नाम जो निकर्से, सब पातक डारै धो।।

यदि कोई एक बार भी उस नाम की धुनी सुन ले तो सारे ही पाप झड़ जाते हैं। जैसे पान बेचने वाला, पान को तमोली में डाल देता है। दूसरा दिन निकलता है तो गले पानों को कैंची से काट देता है। इसी प्रकार सुरत जब छठे चक्कर से आगे चलती है और त्रिकुटी में पहुंचती है तो शब्द की धार से इसके सारे ही पाप कट जाते हैं। ये निर्मल और पवित्र होकर मान–सरोवर में गोता लगा लेती है। सो ये शनै–शनै सतगुरु की दया से वहां पहुंचती है। पर जिसे इन मंजिलों का पता नहीं वह बेचारा क्या करेगा? वह उरले ही घाट पर रह जाता है। न वह आगे गया है और न उसे आगे का पता है। बेचारा काल में ही रह जाता है। काल के लंबे हाथ होते हैं। सो काल अपनी हद से निकलने नहीं देता। पर काल–काल करते रहोगे तो दुखी हो जाओगे। उस काल के आगे बंदगी करके ही निकलना है। ये पांचों धुनी हैं। इनका यही बताना समझाना है। इन धुनियों को याद करो और इन धुनियों के अंदर से निकल जाओ। नाम तो राधास्वामी धाम का निशाना बांधों। इन धुनियों के जो लक्ष्य हैं इनको याद करते हुए चले जाओ। अगर इनकी निंदा करोगे तो मारे जाओगे। कभी कोई बच ही नहीं सकता है। बड़े–बड़ों के इस काल महाराज ने सिर उतार दिए हैं। यह बड़े–बड़ों को चक्कर कटा देता है। सो इसकी निंदा भी नहीं करनी चाहिए। इनकी बड़ाई करनी है निंदा नहीं। अगर कोई पूछे कि निंदा क्यों नहीं करते हो? अरे पगले! कोई करके देखो तो सही। किसी ने की होगी तो मैं खुद ही बता दूंगा और कोई कहे कि हम करते हैं तो उनका तमाशा देखो। उनके हाल कैसे होते हैं? कोई दस वर्ष सड़ता है और कोई १५ वर्ष सड़ता है। संत तो उस मंजिल को तय करके चले जाते हैं। सीधी बातें कहकर जाते हैं। घटिया बातें कभी नहीं करते हैं। कबीर ने बिल्कुल ये बातें कही है कि मैंने दांत तोड़ दिए। मैंने जीभ खींच ली। वे पूर्ण पुरुष थे। मैंने ये बातें बताई हैं कि कबीर के उसूलों पर चलो। कबीर न बन जाना। ऐसा न हो कि कबीर का टोप पहन कर तुम जलूस निकाल बैठो। मारे जाओगे। काल बख्शेगा नहीं। इसने कबीर के साथ जो किया उसे तुम सहन नहीं कर सकते हैं। कबीर तो पूर्ण पुरुष थे। स्वामी जी महाराज को काल ने कहा–

बंद करो अब ये रस्ता, तुमने बहुत किया है सस्ता।

उस घर में पहुंचाने के लिए तो एक ही सुरत काफी है। वह करोड़ो का उद्धार कर सकती है। ये शब्द तुमने सभी को सुना दिया है। जो कबीर साहब जी ने कहा ये वही शब्द है जो स्वामी जी ने प्रगट किया है। उसी शब्द से जीव उस वक्त बचे थे और उसी से अब चलेंगे। वह शब्द सारी दुनियां की जान है। उससे ही सतखण्ड में राधास्वामी धाम में पहुंचना है और कोई दूसरा शब्द नहीं है। उसी का नाम मूलमंत्र है। यही निजनाम है। तीन बार नामदान दे चूका हूं और तीन सत्संग दे दिए हैं। सतगुरु का

हुक्म हुआ तो सवेरे फिर आपकी हाजरी में पहुंच जाऊंगा। जैसा सतगुरु का हुक्म होगा, वैसा ही होगा। मेरे साथी कहते हैं कि इतना काम कैसे करते हो। मैं तो एक कदम भी नहीं रख सकता। यह तो मेरे महाराज ही करवा रहे हैं। मेरे सतगुरु पूर्ण पुरुष थे। करणी के धनी थे। वे दाता थे। उनकी क्या कहूं। वे चारों युगों में आए थे। ये भी मैं कहता हूं। अगर प्रमाण लेना चाहो तो प्रमाण भी दे सकता हूं। वे कुल मालिक थे।

।। राधास्वामी ।।